शेख़ फ़रीद – सबद ११५
दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥
सलोक, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८४

दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥
इकि जागंदे ना लहन्हि इकन्हा सुतिआ देइ उठालि ॥११३॥

सार: प्रकृति के उपहार सार्वभौमिक होते हैं और ऐसे विशाल स्रोत से आते हैं जो सब कुछ अपने में समेटे हुए है। यह उपहार हमें सौंपे गए हैं, इन पर हमारा कोई मालिकाना हक़ नहीं है। यह दृष्टिकोण हमें इस बात पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है कि वास्तव में कौन हमारे साथ है और कौन हमें छोड़ जाता है। जब हम अपना ध्यान स्वामित्व से हटाकर जागरूकता की ओर ले जाते हैं तब हमें यह एहसास होता है कि जीवन का सार इस बात में नहीं है कि क्या हमारे पास है बल्कि इसमें है कि हम अपने भीतर क्या विकसित करते हैं। वास्तव में महत्वपूर्ण हैं, हमारे अनुभव और वह संबंध जो उनसे बनते हैं जो चीज़ें हमारे जीवन को छूती हैं और हमारे भीतर प्रवाहित होती हैं।

दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥
सार्वभौमिक उपहार, दाता सर्वव्यापी चेतना से आते हैं। हमारे साथ वास्तव में क्या चलता है? यह चिंतन दर्शाता है कि जीवन, स्वामित्व नहीं बल्कि इस बारे में है कि हम अपने अनुभवों के साथ कितनी सजगता से जुड़ते हैं।

इकि जागंदे ना लहन्हि इकन्हा सुतिआ देइ उठालि ॥११३॥
कुछ लोग जागरूक रहते हुए भी प्राप्त नहीं कर पाते जबकि कुछ अपने अज्ञान से जागकर प्राप्त कर लेते हैं। यह दर्शाता है कि अनुभूति एक रेखा में नहीं होती, जिनके पास ज्ञान है वह भी अहंकारी हो सकते हैं जबकि जिनके पास ज्ञान नहीं है वह विनम्रता के माध्यम से अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं। (११३)

तत्त्व: गुरु नानक उस गहन सत्य को प्रकट करते हैं, जिसकी प्रतिध्वनि शेख़ फ़रीद के सुझाव में भी सुनाई देता है, कि कुछ लोग बाहरी रूप से सतर्क प्रतीत होते हैं, लेकिन वे सच्ची अंतर्दृष्टि से वंचित रहते हैं, जबकि कुछ लोग गहरी आंतरिक नींद से जागते हैं और अचानक अप्रत्याशित अंतर्दृष्टि प्राप्त कर लेते हैं। यह उदाहरण दर्शाता है कि ज्ञान प्राप्ति एक सीधी रेखा में नहीं होती। हम ज्ञान के रूप में सतर्क रह सकते हैं फिर भी अहंकार के कारण आंतरिक रूप से बंद हो सकते हैं। वहीं, जो व्यक्ति अनभिज्ञ प्रतीत होता है, वह विनम्रता और खुलेपन के माध्यम से परिपक्व हो सकता है। अंततः, अंतर्दृष्टि को जागृत करने वाला तत्व केवल प्रयास या जानकारी नहीं बल्कि हमारे भीतर की अवस्था है जो यह दर्शाता है कि अकसर विनम्रता, वह प्राप्त कर लेती है जिसे अहंकार नहीं पा सकता।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com